मैने वोट क्यों नहीं दिया?

आम जनता ने बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ आम चुनाव में हिस्सा लेते हुए अपने लिए एक सरकार का रास्ता साफ कर दिया। करीब सवा महीने लंबी चली चुनावी प्रक्रिया के दौरान हर तरफ से लोकतंत्र के इस पावन पर्व में हिस्सेदारी करने की अपील भी जारी होती रही और जिस तरह से औसत मतदान का प्रतिशत बढ़ा है उसे देखकर लगता है कि लोगों पर अपील का असर भी हुआ है। भारतीय जनता पार्टी के नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी और अरविन्द केजरीवाल की अपील ने नौजवानों को बड़ी संख्या में लोकपर्व में भागीदारी के लिए प्रेरित भी किया है। नौजवानों की अपेक्षा मेरे जैसा बुजुर्ग बहुत चाहकर भी इस बार भी लोकतंत्र के इस लोकपर्व में हिस्सेदारी नहीं कर सका। आखिर ऐसा क्या कारण है कि मैंने अपना वोट किसी को नहीं दिया?

बहुत अतीत में न जाते हुए अगर हम इस बार के ही लोकसभा चुनाव के मद्देनजर बात करें तो एक बार फिर देश की जनता को राजनीतिक दलों ने मिलकर छला और ठगा है। आजादी के बाद से ही लगातार जो वोटकर्म होता आ रहा है, वही एक बार फिर अंजाम दे दिया गया। अब ज्यादा देर नहीं है जब देश में नयी सरकार के गठन का रास्ता भी साफ हो जाएगा, और एक बार फिर जनता जहां थीं वहीं रह जाएगी, सरकार अपने तरीके से काम करना शुरू कर देगी।

इस लोकसभा चुनाव में पिछले तीन महीने के दौरान जमकर बहस हुई। देश में सत्ता पक्ष होने की आस लगाये मुख्य विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी की ओर से शुरू में तो भ्रष्टाचार और कांग्रेस के कुशासन को मुद्दा जरूर बनाया गया लेकिन जैसे जैसे आम चुनाव का पारा चढ़ता गया, मुद्दे गायब होते गये और व्यक्तिवादी हमलों पर जोर बढ़ता गया। राजनीतिक दलों ने लंबी लंबी तकरीरें कीं। दलीलें दी। दूसरे को दागदार और अपने आपको बेदाग साबित करने की भी कोशिश की। यहाँ तक कि दोषारोपण राजनीति विचार या दलों से नीचे उतरकर व्यक्तिगत हमलों तक के स्तर तक उतर आया।

पूरा आम चुनाव सिर्फ व्यक्तिवादी हमलों पर केन्द्रित होकर रह गया। व्यक्तियों पर बहस बहुत हुई किंतु किसी भी चर्चा में यह बात नहीं उठ सकी कि आखिरकार हम किस लोकतंत्र की दुहाई दे रहे हैं? क्या सिर्फ सत्ता बदल जाने से देश बदल जाएगा? या फिर देश बदलने के लिए हमें व्यवस्था में भी बदलाव करना पड़ेगा? आजादी के बाद से ही हमने मान लिया है कि हमारी सब समस्याओं का समाधान राजनीतिक प्रक्रिया में निहित है लेकिन खुद उस राजनीतिक प्रक्रिया का समाधान कहां है, इस बारे में कभी भी हमने गंभीरता से विचार नहीं किया। जबकि जरूरत तो इस बात की है कि वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के विकल्प की बात भी उठनी चाहिए।

व्यवस्था के विकल्प की बात इसलिए जरूरी है ताकि हम राजनीति के गुण दोषों पर भी बात कर सकें। इस चुनाव में भी वर्तमान व्यवस्था के गुण दोषों पर चर्चा नहीं हो सकी और पूरी बहस वर्तमान व्यवस्था से जुडे राजनीतिक दलों के बीच सत्ता संघर्ष तक सीमित रही। हालांकि चुनावी चर्चा प्रारंभ में भ्रष्टाचार नियंत्रण से शुरू हुई, लेकिन आगे बढ़ते–बढ़ते विकास के दावों तक चली गई और समापन होने तक धर्म के आधार पर ध्रुवीकृत हो गई। यहां तक कि अरविंद केजरीवाल की आप पार्टी भी व्यवस्था परिवर्तन के मुद्दों को स्पर्श तक नहीं कर सकी। हो सकता है कि वह व्यवस्था परिवर्तन के मुद्दों को इस आपाधापी में प्रस्तुत करने को अनुपयोगी मान रही हो।

अरविन्द केजरीवाल की आम आदमी पार्टी ने भी ठीक उसी तरह निराश किया जैसे कि अब तक व्यवस्था परिवर्तन नाम से काम करने वाले अनेक संगठन करते आये हैं। व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर शुरू किये गये ज्यादातर कार्य कालांतर में सत्ता संघर्ष के हिस्सेदार होकर रह जाते हैं। अगर वे बदलाव की बात करते भी हैं तो वर्तमान व्यवस्था में कुछ थोड़ा सा संसोधन होने को ही व्यवस्था परिवर्तन मान लेते हैं। सच बात यह है कि व्यवस्था परिवर्तन नाम पर होने वाले ऐसे आंदोलन छलावा मात्र हैं।

वर्तमान चुनावों में तो व्यवस्था परिवर्तन की कोई चर्चा हीं नहीं हुई, बल्कि देश के सारे समर्पित नागरिक वर्तमान व्यवस्था के भीतर पनपे राजनीतिक दलों को ही वोट देकर अपनी भागीदारी करने के लिए बेताब थे। अच्छे– अच्छे लोगों को यह कहते हुए सुना गया कि वोट जरूर देना चाहिए। यहाँ तक कि नरेंद्र मोदी जैसे नेता मतदान को अनिवार्य करने तक की बात करते हैं। लेकिन मैं अपने जीवन का इतना लंबा वक्त राजनीतिक प्रक्रिया को समझने में बिता देने के बाद भी कभी नहीं समझ सका कि अपना वोट देकर वर्तमान व्यवस्था पर अपनी मोहर क्यूं लगाऊँ? यदि वर्तमान में वोट देने से आंशिक रूप से व्यवस्था परिवर्तन की उम्मीद जगती अथवा कोई एक भी दल चाहे वह कितना भी कमजोर क्यों ना हो व्यवस्था परिवर्तन की बात उठाता तब तो मैं अवश्य ही वोट देने जाता अन्यथा मुझे समझ में नहीं आया कि मैं वोट देने क्यों जाऊँ?

अभी ज्यादा वक्त नहीं हुआ जब देश ने जंतर मंतर से व्यवस्था परिवर्तन की उठी गूंज सुनी थी। अन्ना हजारे और अरविन्द केजरीवाल द्वारा उठाई गई उस आवाज को चालाक राजनीतिक दलों ने बड़ी चालाकी से अपने में समाहित कर लिया और उसी राजनीतिक प्रक्रिया का हिस्सेदार बना लिया जिस व्यवस्था में रहते हुए अन्य राजनीतिक दल जनता के प्रति अपनी

जवाबदेही और विश्वसनीयता खो चुके हैं। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि अन्ना आंदोलन व्यवस्था परिवर्तन के लिए उठी आखिरी आवाज थी। व्यवस्था परिवर्तन के लिए आवाजें उससे पहले भी उठती रही हैं और आगे भी उठती रहेगी।

ऐसी स्थिति में कुछ संगठनों ने मिलकर आशा की एक नयी किरण जगायी है। 1. लोक स्वराज्य मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष सिद्धार्थ शर्मा बंगलौर (कर्नाटक) 2. महासचिव रमेश चौबे पटना (बिहार) 3. व्यवस्था परिवर्तन मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य पंकज वाराणसी 4. महासचिव छबील सिंह सिसौदिया, हापुड (उत्तर प्रदेश) 5. प्रसिद्ध गांधीवादी तथा आचार्य कुल के पदाधिकारी श्री ओमप्रकाश दुबे नोएडा 6. प्रसिद्ध विचारक डॉ. ईश्वर दयाल नालंदा (बिहार) ने संयुक्त रूप से सूचना देकर नई आशा की किरण जगायी है जिसके अनुसार 13 जून से 22 जून तक जंतर– मंतर दिल्ली में वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के विरूद्ध व्यवस्था परिवर्तन के लिए एक धरना देने की योजना है। इस धरने में चार मुद्दे उठाये जायेंगे और जनमत जागरण की शुरूआत होगी।

व्यवस्था परिवर्तन की बात उठाने के लिए ये जन संगठन मुख्यरूप से चार मुद्दों पर अपना दस दिवसीय अभियान जंतर मंतर पर चलायेंगे। इसमें पहला मुद्दा है, परिवार, गांव, जिला को संवैधानिक अधिकार दिये जायें। दूसरा मुद्दा है, राइट टू रिकाल को लागू किया जाए। सिर्फ राइट टू रिजेक्ट का अधिकार देकर मतदाताओं को भ्रम में न रखा जाए। तीसरा मुद्दा है, संसद के समानांतर लोक संसद की स्थापना की जाए। और चौथा मुद्दा है, प्रत्येक व्यक्ति को 2000 मूल रूपया मासिक जीवन गुजारा भत्ता दिया जाए।

लंबे विचार विमर्श के बाद विभिन्न जन संगठन इन चार मुद्दों पर पहुंचे हैं और हमारा मानना है कि अगर इन चार मुद्दों को जनता के बीच पहुंचा दिया जाए और जनता खुद राजनीतिक दलों से सवाल करना शुरू कर दे तो व्यवस्था परिवर्तन की दिशा में पहला कदम उठ जाएगा। नहीं तो परिणाम आने के बाद सरकार किसी की भी बन रही है किंतु शोषण जनता का होता आया है और होता रहेगा। विकास योजनाओं के नाम पर उसे पहले भी विपन्न बनाया जाता रहा है और आगे भी बनाया जाता रहेगा। अच्छा हो कि अब राजनीतिक दल सत्ता परिवर्तन करने की बजाय व्यवस्था परिवर्तन की दिशा में भी पहल करें ताकि मेरे जैसे लोग भी उत्साह से इस लोकतंत्र में हिस्सेदारी कर सकें।

प्रश्नोत्तर

1– श्री गंगा प्रसाद बरसैंया, छतरपुर (म.प्र.), 41119

प्रश्न—ज्ञानतत्व पाते हीं उसे ध्यान से पढ़ता हूँ और आपके द्वारा दिये गये विचारों से लाभान्वित होता हूँ। कई बार मन में असहमति भी उभरती है। अंक 287 के पृष्ठ 7 पर आपने साम्प्रदायिक मुसलमानों और साम्प्रदायिक हिंदुओं को आपस में मरने–कटने पर चिंता न करने की बात लिखी है, वह मेरे गले नहीं उतरती। एक ओर आप लोकतंत्र और स्वतंत्रता की बात करते हैं, दूसरी ओर संगठन न बनाने की सलाह भी देते हैं। लोकतंत्र में समय–समय पर आवश्यकतानुसार संगठनों का बनना स्वाभाविक है। आप जैसे भावनादर्शों के समर्थक, राष्ट्रभक्त, संत से मरने–करने और तटस्थ रहने की बात पढ़कर सहमत कैसे हुआ जा सकता है। कृपया अपनी बात और स्पष्ट करें।

उत्तर– संगठन हमेशा अधिकारों के लिए संघर्ष की बात करते हैं, कर्तव्य के लिए नहीं। लोकतंत्र में संगठन बनाने की छूट संविधान ने दी है वह संविधान बनाने वालों की ना समझी का सबूत है। संगठन सिर्फ प्रवृत्ति के आधार पर हीं बनाये जा सकते हैं किसी अन्य आधार पर नहीं। चाहे वह आधार धर्म हो, जाति हो, व्यवसाय हो या अन्य कोई भी आधार हो। मैं अभी तक नहीं समझा कि लोकतंत्र में संगठन बनाना क्यों आवश्यक है? यदि धर्म, जाति, भाषा के आधार पर संगठन बनाने की छूट नहीं होती तो न आज समाज टूटता और न हीं अपराधियों को किसी संगठन में आश्रय मिलता। आज बड़े–बड़े अपराधी भी विभिन्न संगठनों में आश्रय पा रहे हैं। क्या यह उचित है ? जो लोग किसी संगठन के सदस्य नहीं हैं वे क्या अलोकतांत्रिक हैं? मेरे विचार में वे लोग अधिक लोकतांत्रिक हैं जो किसी संगठन से जुडे हुए नहीं हैं। संगठन न्याय को कमजोर करता है और अपनत्व को मजबूत करता है। आपको विचार करना चाहिए कि न्याय और अपनत्व में से किसे महत्वपूर्ण माना जाये। मैं न्याय का पक्षधर हूँ।

2–बसंतभाई माझी, सर्वोदय आश्रम, माढी ताजियापुर मंहसाना गुजरात 11860

प्रश्न—आप डॉ. मनमोहन सिंह के प्रशंसक हैं। उनको कई लोग असफल सिद्ध कर रहे हैं। दोनो पक्ष में तथ्य हैं। कोई ज्यादा सफल तो कोई बिल्कुल असफल सिद्ध करेगा। लेकिन मेरे दृष्टिकोण से वो जरूर सफल रहे हैं। ऐसा मैं भी मानता हूँ। फिर भी भारत की शिक्षण की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, गरीबी की समस्या, विषमता की समस्या और खेती– गौ पालन की समस्या, एकता की समस्या आदि बहुत विकट हो रही है। इसका समाधान होना चाहिए। इसके लिये हमें क्या करना चाहिए ताकि हम सफल बनें और देश आगे बढे।

लोक स्वराज्य मंच की प्रवृत्ति हर अंक में देते रहेंगे तो इससे कैसे जुड सकें समझ में आ सकेगा।

3–भगवानदास अग्रवाल, रतलाम मध्यप्रदेश 43352

प्रश्न—आपका ज्ञानतत्व लगभग गत तीन वर्षों से निरंतर प्राप्त हो रहा है तथा आपने देश की उन्नति के संबंध में विचार दिये हैं वे न केवल मौलिक हैं वरन् देश की प्रगति के लिये सही मार्ग भी हैं। इन विचारों से मेल रखते हुए भी अन्ना जी ने आंदोलन प्रारंभ किया था। तब श्री केजरीवाल जी भी साथ थे। लेकिन इसमें मत भिन्नता होने से आंदोलन बिखर गया व अलग हो गये। केजरीवाल ने आपके सुझाये मार्ग जनलोकपाल व सुराज के उद्‌देश्य को प्राप्त करने के लिये आम आदमी का गठन किया और दिल्ली में सफलता प्राप्त की। लेकिन जनलोकपाल के मुद्‌दे पर त्याग देना क्या उचित था? दूसरा आम चुनाव में तेजी से इतने प्रत्याशी को उतारना क्या ठीक है। इसके अलावा उनके द्वारा दिये जा रहे वक्तव्य क्या उचित हैं।

भा.ज.पा. ने भ्रष्टाचार व सुशासन को लेकर कांग्रेस को कठघरे में खड़ा किया है, और अब भ्रष्टाचार में लिप्त श्री रामविलास पासवान व येदियुरप्पा से गठबंधन करके कथनी करनी का फर्क नहीं है क्या? यदि क्षेत्रीय पार्टियों को छोड़ दे तो राष्ट्रीय स्तर पर जनता के सामने बडी भ्रम की स्थिति है। और क्या श्री मोदी जी जितनी घोषणा, सुशासन, भ्रष्टाचार खत्म करने की बात कर रहे हैं वास्तव में वे कर पायेंगे।

आपकी सफलता चाहता हूँ। कृपया इन प्रश्नों पर प्रकाश डालकर मार्गदर्शन दें।

उत्तर— पिछले पाँच वर्षों में अलग—अलग लोगों ने अलग— अलग गलतियां की हैं जिसका प्रभाव भारतीय जनमानस पर पड़ा है। मनमोहन सिंह बहुत अच्छी सरकार चला रहे थे। इनकी अर्थनीति भी ठीक थी, न्यायपालिका भी मजबूत हो रही थी। नितिश कुमार भी मजबूत हो रहे थे। भ्रष्ट लोग जेलों में जा रहे थे। सोनिया गांधी के परिवार मोह ने मनमोहन सिंह की सज्जनता का दुरूपयोग किया। परिणाम यह हुआ कि मनमोहन सिंह हीं नहीं डूबे, सोनिया गांधी भी डूब गई और ये दो हीं नहीं डूबे बल्कि लोकतंत्र पर से लोगों का विश्वास भी उठने लगा। इसका लाभ संघ परिवार ने उठाया। मैं भी जानता हूँ कि मुसलमानों का भारत के संसाधनों पर पहला हक है, यह बयान भी मनमोहन सिंह से सोनिया गांधी की चौकडी ने हीं दिलवाया था। अर्थव्यवस्था भी चौपट करने में सोनिया गांधी के सलाहकार परिषद् की ही भूमिका रही और इस तरह जनता ने अन्ना हजारे, अरविंद केजरीवाल को विकल्प के रूप में देखा। अन्ना भी मनमोहन सिंह की तरह एक भले आदमी हैं। मनमोहन सिंह सोनिया गांधी के दबाव में थे जबकि अन्ना हजारे किरण बेदी बी के सिह से गुमराह हो रहे थे। मेरे विचार में अरविंद केजरीवाल ने राजनीतिक दल बनाने में ज्यादा जल्दबाजी कर दी। मुझसे जब उन्होनें सलाह ली थी तब भी मैंने उन्हें यही सलाह दी थी। अरविंद केजरीवाल की नीयत पर तो कोई संदेह नहीं है किंतु निर्णय करने में भूल हुई। अन्ना हजारे व्यवस्था परिवर्तन के पक्षधर थे और उन्होनें मेरे सामने अरविंद केजरीवाल जी की टीम को सुझाव दिया था कि डेढ़ वर्ष बचा है, इस अवधि में प्रचार करके समाज में व्यवस्था परिवर्तन की भूख पैदा करें और चुनावों की घोषणा होने के बाद अल्पकाल में हीं वर्तमान राजनेताओं के समक्ष चुनौती खडी कर दें। यदि हम चुनावों की घोषणा के बाद कोई गंभीर कदम उठायेंगे तो परिवर्तन संभव है। लेकिन अरविंद जी की टीम जल्दी में थी। एक बार तो ऐसा लगा कि वे सफल भी हो जायेंगे लेकिन जल्दी हीं वे बिखर गये फिर भी निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। संघ परिवार और नरेंद्र मोदी से भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। किसी नये नेतृत्व के आते हीं अन्ना और अरविंद सरीखे लोग एकजुट हो जायेंगे, आप लोग ऐसा विश्वास रखिये और प्रतीक्षा कीजिये।

4—शिवदत्त बाघा, बांदा 7880

प्रश्न—अव्वल तो मैं विनम्र निवेदन करना चाहूँगा कि कोई भी विचारक किताबों की पटरी से अलग हटकर हीं चलता है। विचार उसके अपने होते हैं जिनमें पूरी मौलिकता होती है। किताबी बातें उसकी अपनी नहीं हो सकती हैं। मौलिक अधिकारों के आधार पर आपने इस व्यवस्था को लोकतंत्रीय सिद्ध करने का प्रयास किया है। शायद आप आज जो समाज की स्थिति है उसे नहीं देख पा रहे या देखना नहीं चाहते। मौलिक अधिकारों की जमीनी हकीकत भी देखनी जरूरी है। इस धरती पर प्राणी रूप में केवल मनुष्य का हीं अधिकार है' जीने का अधिकार'। जान है तो जहान है' यह प्राकृतिक चिंतन है। जीवन के बाद हीं सारे अन्य अधिकार शुरू होते हैं। क्या कांस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया व्यक्ति (नागरिक) के जीने के अधिकार की गारंटी देता है? शायद यह दस्तावेज अपने नागरिकों को ऐसा कोई भरोसा देने से बचता हुआ दिखाई दे रहा है तभी आप यह कह सकें कि आत्महत्या करनें वाले किसानों भूख बीमारी से मरने वाले लोगों के लिये राज्य व्यवस्था उत्तरदायी नहीं है। ये सब अतिरिक्त कार्य हैं।

आप सुरक्षा व न्याय के अलावा अन्य कार्य अतिरिक्त के खातें में डालकर राज्य व्यवस्था को भार मुक्त, चिंता मुक्त कर देते है। शायद यही वजह है कि ईश्वर की अनुपम कृति इंसान के जीवन का मूल्य इंसान के विचार से हीं बाहर हो चुका है। जो आपके द्वारा प्रस्तुत उत्तर से प्रतिध्वनित हो रहा है। पता नहीं सुरक्षा से आपका क्या अभिप्राय है। जब किसी संकट से घटना से किसी की जिंदगी को नहीं बचाया जा सकता तो सुरक्षा का क्या अर्थ। न्याय की भी अपनी— अपनी परिभाषाऐं हैं। शहीदे आजम भगत सिंह को फांसी देना ब्रिटनी सरकार की नजर में न्याय है लेकिन हमारी नज़र में अन्याय। अफजल

गुरू को फांसी देना गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की दृश्टि में न्याय है किंतु पाकिस्तान की सरकार और जनता की दृष्टि से अन्याय। जबकि न्याय तो न्याय है। इसकी परिभाषा सार्वभौमिक, सर्वकालिक, सर्वस्वीकार हीं होना चाहिए तो हीं न्याय। मुट्ठी भर लोगों को छोडकर करोडों करोड लोग अपनी जिंदगी के लिये दूसरों के सामनें दुम हिलाते, मिमियाते, गिडगिडाते हुए लोकतंत्र और मुलाधिकारों का खोखलापन प्रस्तुत करते रहतें हैं जिसे शायद आप नहीं देख पा रहे।

आपने अपने ज्ञानतत्व 16 फरवरी से 28 फरवरी 2014 में लोकसभा चुनावों की स्वयं की समीक्षा प्रकाशित की है। इसे समीक्षा कहें या किसी एक विषय पर एक व्यक्ति की निजी राय जो अपने पाठक को किसी परिणाम तक पहुँचनें में मदद करती दिखाई नहीं देती। बकौल समीक्षा कांग्रेस को दिया गया वोट एक वंश की गुलामी होगी। भा.ज.पा. को दिया गया वोट तानाशाही का समर्थन होगा। आम आदमी को दिया गया वोट समुद्र में डालने जैसा होगा। अन्य को दिये गये वोट से तानाशाही का खतरा तो नहीं है पर समस्याओं का कोई समाधान भी नहीं है।

आपकी यह समीक्षा किसी को भी किनारे नहीं पहुँचाती है। इस समीक्षा से यह भी स्पष्ट हो रहा है कि देश में न लोकतंत्र है और न किसी संविधान का कोई अस्तित्व है। मैने विगत वर्ष आपको एक रजिस्टर्ड पत्र भेजा था और साथ में साधारण ड़ाक से एक प्रिन्टेड पर्चा भी। उस पत्र में मैने दावा किया था कि इस देश में लोकतंत्र नहीं है। बल्कि एकल जातीय राजतंत्र की जगह बहुजातीय राजतंत्र है जिसका समर्थन कांस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया भी बराबर से कर रहा है आज 65—66 वर्षों से। मैने इस पत्र में यह भी कहा था कि इस विषय पर बहस भी की जा सकती है।

पर अभी तक इस संबंध में कोई जानकारी नहीं दी गई। मैने यह सवाल अकारण नहीं उठाया। अगर इस देश में लोकतंत्र होता तो जो सवाल आपकी तथा कथित समीक्षा में उठाये गये हैं या अन्य लोगों की जबानी, लेखकीय कथ्यों में उठते रहें हैं लोकतंत्र को लेकर वो शायद न उठते और कहीं भी तानाशाही, वंशवाद, जातिवाद, संप्रदायवाद, कटरवाद के खतरे न दिखते। तब सिर्फ नीतियों को लेकर हीं चर्चायें होती। आज 65—66 वर्षों से एक झूठ को बराबर सब(मीडिया, चिंतक, लेखक) दोहराये जा रहे हैं ' हम लोकतंत्र हैं, दुनिया के सब से बडे लोकतंत्र हैं' आदि—आदि। हद तो तब हो जाती है जब एक निश्चित अवधि में छल— प्रपंच, जाति— संप्रदाय आधारित बाहुबल, धनबल के सहारे चुनाव रचाकर लोकतंत्र का सर्टिफिकेट जारी कर अपनी पीठ थपथपाते हैं कि हम लोकतंत्र हैं जब कि इसके विपरीत एक आम आदमी आजादी के वक्त जिन हालातों में जन्मा था उन्हीं हालातों से जूझते हुए वह मरघट तक पहुँच रहा है।

दरअसल परम सभ्य, शिक्षित, सुसंस्कृत, जातिविहीन, हर तरह से सम्पन्न समाज की व्यवस्था है लोकतंत्र। यह हमारे जैसे जातिवादी, संप्रदायवादी, अशिक्षित, असभ्य, विपन्न, अभाव ग्रस्त, गरीब, दरिद्र समाज की व्यवस्था नही है लोकतंत्र। खैरात बांटने, लोभ— लालच दिखाने, धमकाने से हांसिल किए गये अथवा छल—छद्म, जाति संप्रदाय की दुहायी लगाकर हासिल किये गये वोट लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्रमाणिकता को उसके उद्देश्य को क्या क्या सिद्ध कर पा रहे हैं।

आजादी के बाद यह तय हो गया था कि देश को पूंजीवादी, राजतंत्रात्मक रास्ते पर हीं चलना है, लोकतंत्र का सिर्फ मुखौटा हीं लगाना है जो कई मायने में यानी सत्ता हथियाने से लेकर सत्ता संचालन, लूट—पाट के लिये सुविधाजनक रहेगा। यूं भी अगर लोकतंत्र का मुखौटा तैयार नहीं किया जाता तो सत्ता का दावा उनका नहीं बनता था जिनके हांथों में सत्ता उस समय संभाली गयी। लोकतंत्र के मुखौटे की आड में हीं सत्ता के दावेदार वे ठहराये गये जिन्हें विदेशी ताकतों के ईशारे पर इस देश के जीवन मूल्यों, आदर्शों, उद्देश्यों व इसके अस्तित्व को मिटाने का कार्य इंच दर इंच करना था। निरीक्षण करें उनके वारिस लोकतंत्र के मुखौटे की आड में उस कार्य को अंजाम तक पहुँचा रहे हैं।

उत्तर— सबसे बुरी बात यह है कि अच्छे— अच्छे लोग भी मार्गदर्शन की जगह अनुकरण की ईच्छा रखते है। मैंने वर्तमान चुनाव में कांग्रेस और भा.ज.पा. के अच्छे— बुरे परिणाम आपको बताये हैं न कि मैंने आपको कोई अंतिम निष्कर्ष बताया है। निष्कर्ष तो आपको निकालना है। यदि कोई साधारण व्यक्ति ऐसा प्रश्न करता तो मैं उसे टाल भी देता किंतु आप जैसा विद्वान मुझसे कहे कि आपने सबके गुण— दोष तो बता दिये किंतु यह नहीं बताया कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं स्पष्ट कर दूं कि मैने यह नहीं बताया है क्योंकि न मैं स्वयं किसी निष्कर्ष पर पहुंच सका हूँ न मैं आपकों अपने अनुसार चलने की सलाह देता हूँ। मेरे विचार में आप अभी तक सरकार को शासन और समाज को शासित की भूमिका में देख रहें हैं। यह स्थिति आदर्श लोकतंत्र की ना होकर प्रदूषित लोकतंत्र की है। जिसमें समाज हर कार्य के लिए शासन का मुंह देखता हैं। अगर शासन हीं सब कुछ है तो समाज में आप— हम जैसे विचारकों की क्या भूमिका है? निकम्में लोग हर कार्य के लिए शासन को दोष देते हैं। जबकि समाज की सामाजिक बुराईयाँ दूर करना हम आप जैसे समाज सुधारकों का कार्य है। शासन का दायित्व तो पाँच कार्यों से समाज की सुरक्षा है तथा छठवें कार्य के रूप में प्रत्येक ईकाई को दूसरी ईकाई के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप से रोकना है। शासन का सिर्फ इतना हीं दायित्व है। वे पाँच कार्य हैं, एक— चोरी, डकैती, लूट दूसरा— बलात्कार, तीसरा— मिलावट व कम तौलना, चौंथा— जालसाज़ी व धोखाधडी, पांचवां— हिंसा और आतंक और छठवां— व्यक्ति, परिवार व समाज के आंतरिक मामलों में किसी अन्य ईकाई का हस्तक्षेप रोकना,। राज्य शासक नहीं

व्यवस्थापक होता है। जिस तरह कोई व्यक्ति या परिवार किसी समय में किसी अन्य की सहायता करने के लिए स्वतंत्र है। यघपि यह सहायता करना उसका दायित्व नहीं है, मात्र कर्तव्य है। उसी तरह छः कार्यो को छोड़कर कोई सातवां कार्य राज्य का दायित्व नहीं है मात्र स्वैच्छिक कर्तव्य है। आपने अपने पत्र में बडी–बडी बातें लिखी हैं किंतु आपने यह नहीं लिखा कि उपरोक्त छः दायित्वों को पूरा करना राज्य की प्राथमिकता है अथवा आत्महत्या को रोकना, बीमारियां रोकना, भोजन की गारंटी देना, रोजगार के अवसर पैदा करना जैसे कार्य। मै यह नही समझा कि यदि सारा काम सरकार का है तो फिर आप का मेरा क्या काम है? क्या हम आप सिर्फ सरकार के कार्यो की समीक्षा तक करते रहे? मेरे विचार से स्वतंत्रता के बाद सुरक्षा और न्याय में भारी गिरावट आयी है। प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र में भी गिरावट आयी है साथ ही साथ प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत या पारिवारिक सामाजिक मामलो में भी उचित अनुचित का निर्णय करने की शक्ति में भी गिरावट आयी है। यहॉ तक कि आप जैसे विद्वान भी स्वयं निष्कर्ष न निकाल कर सब बात मेरे उपर डालना चाहते है। इस गिरावट का कारण आप जैसे विचारको के विचार हैं जो अपना कार्य न करके सारा कार्य राज्य पर इस तरह थोपना चाहते हैं जैसे कि राज्य हमारा मालिक है और हम गुलाम। कृप्या वर्तमान प्रदूषित लोकतंत्र को आदर्श लोकतंत्र की कल्पना से दूर रखें तो अच्छा है।

किसी व्यक्ति के मौलिक अधिकार का अर्थ उसकी अपनी स्वतंत्रता है जिसमें कोई अन्य किसी प्रकार की कटौती नहीं कर सकता। मौलिक अधिकर का अर्थ यह नहीं है कि कोई अन्य आपकी सहायता के लिए बाध्य है। यह सहायता समाज का कर्तव्य है। राज्य भी यदि अपने दायित्व पूरे कर लेता हैं तो आपकी सहायता कर सकता है। किंतु राज्य उस सहायता के लिए बाध्य नहीं है। आज जो समाज की स्थिति है उस स्थिति को मैं तो ठीक से देख पा रहा हूँ कि सभी समस्याओ के समाज की राज्य के आंतरिक मामलों में आज का अधिकाधिक हस्तक्षेप है। जिन लोगों का कर्तव्य था कि वे समाज का मार्गदर्शन करते वे स्वयं ही राज्य से उम्मीद कर रहे हैं कि राज्य समाज का मार्गदर्शन करे। मैं उन लोगों में नहीं जो अपने दायित्व से भागकर अपना दायित्व भी राज्य पर सौंप दूॅ। मैं तो चाहता हूँ कि राज्य अपना दायित्व को पूरा करे और हम अपने दायित्व को।

5– उगमा लाल प्रजापति, अजमेर राजस्थान 50005

प्रश्न–आपके द्वारा भेजा गया ज्ञानतत्व निरंतर प्राप्त हो रहा हैं जिसके लिये धन्यवाद! सर्वप्रथम आपसे अनुरोध है कि मेरा नाम उगमा लाल प्रजापति है न कि उगमा शीश। कृपया संशोधन करावें।

वास्तव में ज्ञानतत्व भारत के बारे में चेतना व जागृति भरा सार तत्व है। आजादी के बाद से अब तक का मूल्यांकन किया जाये तो संतोष भी होंता है तथा असंतोष भी। आजादी के बाद गांधी जी ने जो सपनों का भारत संजोया वैसा भारत नहीं बना। 67 वर्षो से शासन एक हीं पार्टी कर रही है। चाहे प्रत्यक्ष में या अप्रत्यक्ष में। फलस्वरूप देश की दशा बद से बदतर हुई। पहले मुगलों ने फिर अंगेजों ने बडी कलाकारी व शातिरता से जी भरकर लूटा। बहुमत के बल पर, लचर संविधान के बल पर, आरक्षण का हव्वा बताकर, गरीबों, मजदूरों, किसानों को धोखा देकर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष राज किया तो कांग्रेस ने हीं किया, अन्य कोई मुख्य रूप से जवाबदेह नहीं। भारत का बच्चा– बच्चा भ्रष्टाचार , मंहगाई, असुरक्षा, चोरी, गुंडागिरी, दादागिरी से परेशान है। चारों तरफ देश का बच्चा– बच्चा अंदर हीं अंदर घुटन महसूस कर रहा है। करें तो क्या करें सुनने वाला कोई नहीं। होता वही जो सरकार चाहती है। हर चुनाव में नये– नये वादे, नये– नये नारे या रेवंडियॉं बांट कर चुनाव जीत लिया जाता है। भोली भाली जनता को ठग लिया जाता है।

हाल हीं में नये–नये बने केजरीवाल के तौर तरीकों से शुरू में लगा कि जरूर यह शख्स कुछ करके दिखायेगा। मगर थोडे हीं दिनो में लोकसभा की हवाई उडान भर कर नये– नये स्टिंग ऑपरेशन करके, झूठे इल्जाम लगाने की राह पकड़ ली। लगता है सरकार बनवाने वाले का हीं षडयंत्र है ड्रामा है। जिसे जनता ने पहचान लिया इसकी भी पोल खुल चुकी।

नया सवेरा, नयी किरण अब नजर आ रही है। युवाओं व सभी मतदाताओं को विश्वास है तो केवल नरेंद्र मोदी में है। देश को आदर्श, समृद्ध, सुरक्षित, प्रगतिशील बनाने के लिये शख्ती तो करनी हीं पडती है जैसे इन्दिरा जी ने की थी। वोट बैंक की नीति से देश आगे नहीं बढ़ सकता, आज देश पर अरबों– खरबों का कर्जा है, जिसके सामने विकास बौना है। अधिकांश राशि कमीशन की भेंट चढ जाती है। धन विदेशों में चला जाता है। इसके लिये अब जनता नरेंद्र मोदी के नाम पर बी.जे.पी. को एक बार केंद्र में रखना चाहती

6–प्रो0. आर.एन लबाना. 208 द्वारिकापुरी, इन्दौर 40365

प्रश्न–285 के ज्ञानतत्व में मैं आपके विचारों को पढ़ा किंतु प्रश्न है कि देश में व्याप्त उच्श्रृंखलता में लोकस्वराज्य तो खतरनाक हो गया है। अब तो देश में सुराज्य की आवश्यकता है, किंतु वर्तमान परिस्थिति में भारत की यह हालत हो गई है कि सुराज्य कल्पना की वस्तु हो गया है। हमारे संसदीय प्रजातंत्र के रहते भ्रष्टाचार को मिटाना असंभव हो गया है। अध्यक्षात्मक प्रणाली में उम्मीद की जा सकती है। अरविंद केजरीवाल भी उच्च आदर्श की स्थापना करने राजनीति में आए

किंतु उनका आदर्श अन्ना के साथ रहने तक हीं दिखा किंतु अब वह विकास के नाम पर भ्रष्टाचार के नाम पर लोगों को बडे–बडे प्रलोभन दे रहे हैं, जैसा कि उन्होनें दिल्ली में किया था। तो केजरीवाल भी अब वोट बैंक की राजनीति में उलझ गयें हैं और यह हमारे संसदीय प्रजातंत्र की हीं देन है। ऐसे में उनसे ईमानदारी की कल्पना हीं नहीं की जा सकती हैं। देश की आंतरिक और बाहरी सुरक्षा में उनकी कोई सोच नहीं हैं। उनकी पार्टी न तो पूर्ण संगठित है न उस पर कोई नियंत्रण है। उनके लोगों पर भी दुराचार के आरोप लगे हैं।
नरेंद्र मोदी से कुछ उम्मीद की जा सकती हे किंतु आपकी दृष्टि में वे तानाशाह हैं। मेरी दृष्टि में तो देश में सैनिक या राष्ट्रपति शासन लगा देना चाहिए। फिर भी मेरे विचार से मोदी शासन चला सकते हैं और देश के स्वाभिमान की रक्षा और सुरक्षा में वे सफल होंगे, वे काफी अनुभवी भी हैं। संघ और पार्टी का उनपर नियंत्रण है।
पार्टियां और क्षेत्रीय दल अपने घोषणापत्रों में वोट के लालच में कई व्यवहारिक वादे कर लेते हैं, जिनसे देश में मंहगाई और अपराध बढ़तें हैं और विभिन्न प्रकार के टैक्स लगाने पडतें हैं। यही संसदीय प्रजातंत्र की बुराई है, क्योंकि इसमें बहुमत दल की सरकार बनती है, और बहुमत लाने के लिये पार्टियां और नेता कुछ भी कर सकते हैं, भ्रष्टाचार पनपता है। बार–बार के मध्यावधि चुनावों का बोझ भी देश को झेलना पड़ता है। अध्यक्षात्मक प्रणाली अपना लेना चाहिए, वैसे तो अभी आंशिक रूप से अध्यक्षात्मक की तर्ज पर हीं प्रधानमंत्री पद उम्मीदवार के रूप में चुनाव लडें जा रहे हैं। संसदीय प्रणाली में बहुमत दल की सरकार बनती है जबकि हमें विवशता में मिली– जुली सरकार बनानी पड़ रही है।

उत्तर– मैं भी संसदीय प्रजातंत्र के विरूद्ध हूँ। मैं भी मानता हूँ कि अन्ना हजारे, अरविंद केजरीवाल की सफलता के कोई स्पष्ट लक्षण नहीं दिख रहे हैं, मैं यह भी देख रहा हूँ कि दो वर्ष पहले हीं संसदीय लोकतंत्र लोकस्वराज्य में बदलने की अन्ना, केजरीवाल की मांग को सारे भारत में एकजुट समर्थन मिला था। मैं यह भी देख रहा हूँ कि उनकी असफलता के बाद मुस्लिम सांप्रदायिकता के विरूद्ध संघ परिवार व मोदी को वैसा हीं समर्थन मिला है किंतु न मैं अध्यक्षीय प्रणाली के पक्ष में हूँ न तानाशाही के पक्ष में। आप मुझे यह बताने की कृपा करें कि यदि तानाशाह बुरा आदमी बन गया तो उसे हटाने का क्या तरीका होगा? हमारे पास वर्तमान स्थिति में बुरे लोगों को हटाकर मोदी को बिठाने की स्वतंत्रता है किंतु यदि कोई तानाशाह बैठ गया चाहे वह सैनिक तानाशाह हो या असैनिक। उस स्थिति में उससे मुक्ति का मार्ग क्या होगा। मैं समझता हूँ कि आप निराश हैं तो निराशा में आत्महत्या करने की सलाह दे रहे हैं। मैं निराश नहीं हूँ। मुझे विश्वास है कि हम सब मिलकर एक नया अन्ना, अरविंद केजरीवाल पैदा कर लेंगे और पुनः लोकस्वराज्य की दिशा में बढ़ेंगे। पहले तो यह काम कुछ कठिन दिख रहा था किंतु अब नई परिस्थितियों में और आसान हो जायेगा। निराश न हों। प्रतीक्षा कीजिये। आपनें बार–बार मध्यावधि चुनावों पर उदाहरण दिया हैं किंतु पिछले पंद्रह– बीस वर्षों में कोई मध्यावधि चुनाव नहीं हुआ इसलिये यह उदाहरण पर्याप्त नहीं हैं। मैं पुनः कह दूं कि लोकतंत्र का समाधान लोकस्वराज्य हीं है तानाशाही नहीं।

7– श्री राधेश्याम सोनी, सीतापुर (उ.प्र.) 10773

प्रश्न– ट्रेन में यात्रा के समय ज्ञानतत्व पढ़नें को मिला। ऐसा लगा कि आप लीक से हटकर गम्भीर विचार मंथन कर रहें हैं। यह बात सच है कि आज के नेता देश को खोखला करनें और दिवालिया बनाने में जरा भी शर्म महसूस नहीं करते। उसी तरह देश में बड़े–बड़े पंडालों पर तथा टी.व्ही. चैनलों पर कथा, प्रवचन तथा उपदेश की भी बाढ़ आयी हुई है किंतु सामान्य मानव का चरित्र गिर रहा है। इस प्रश्न का भी समाधान खोजना चाहिए। जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन' इस कहावत को किनारे करके आप कई दिनों के आंटे–पानी की बनी हुई ब्रेड जैसे अभक्ष्य गौरव से खाते जाते हैं, यह विदेशी षड़यंत्र है। यहां तक कि दूध भी ताजा नहीं मिलता, कैसे–कैसे पाउडर के दूध पीने को मिलते हैं। दूध की जगह चाय का जहर पिलाया जा रहा है यदि इसी तरह गौ वंश की हत्या होती रही तो न देशभक्त मिलेंगे, न प्रवचन करने वाले संत। मेरा विचार है कि गौ हत्या पर सरकार तत्काल प्रतिबंध लगावे।

उत्तर– गौ हत्या पर सरकारी प्रतिबंध हो या सामाजिक, यह बात लबें समय से बहस का विषय बनी हुई है। यदि गौ हत्या पर सरकार के प्रतिबंध की मांग की जायेगी तो इसका अर्थ यह होगा कि हमें क्या खाना चाहिए और क्या नहीं इसका निर्णय सरकार कर सकती है। ऐसी स्थिति में यदि सरकार उल्टा निर्णय करे तो भी हम कुछ नहीं कर सकते हैं क्योंकि हमने हीं सरकार को यह अधिकार दिया है। मैं तो इस पक्ष में हूँ कि यह सरकार का काम नहीं है कि वह किसी सामाजिक काम में हस्तक्षेप करे, किसी पर प्रतिबंध लगाये और किसी कार्य की छूट दे। यदि हम आप जैसे लोगों की समाज में विश्वसनीयता हो जाएगी तो समाज अपने आप गौ हत्या पर प्रतिबंध लगा देगा। एक गांधी का समाज पर इतना प्रभाव था और आज वैसा प्रभावशाली व्यक्ति नहीं बन पा रहा है। हमें चाहिए कि हम समाज को गौ हत्या बंदी के लिए सहमत करें। आज गाय पालना अलाभकर होता जा रहा है क्योंकि दूध के मूल्य बढ़ने नहीं दिये जा रहे हैं। कृत्रिम उर्जा

पर सब्सीडी दी जा रही है। आप बताईऐ कि कैसे गाय पालना लाभकर होगा जब हल जोतने के लिए ट्रैक्टर पर छूट मिलेगी। बिजली, डीजल सस्ता होगा तो आप पशुपालन को लाभदायक कैसे बनाऐंगे। मांग कीजिये कि कृत्रिम उर्जा का मूल्य बढ़े, कृत्रिम खाद से भी सब्सीडी खत्म हो, दूध, घी, मक्खन पर से टैक्स हटे तब कुछ अच्छा होना संभव है।

8– चिन्मय व्यास, देहरादून उत्तराखंड, 1626

प्रश्न–अंक क्रमांक 288 कल मिला। अभी चुनाव का माहौल है। पहले उसी के बारे में। अभी हम (जनता) यदि चाहे तो सारे चुनाव तंत्र को ध्वस्त कर सकते है। सारे भारत में तो नहीं किंतु जागरण क्षेत्र के अधिकांश वोटर यदि किसी उम्मीदवार को वोट न दे और नोटा (इनमें से कोई नहीं) का प्रयोग करें तो क्या होगा? सबसे ज्यादा वोट मिलेंगे नोटा को और एक अभूतपूर्व स्थिति निर्मित होगी चुनाव आयोग और राजनीतिक दल के सामने। नये सिरे से वहां चुनाव कराना होगा, या कोई नया उपाय खोजना होगा। ज्ञानतत्व पहल करें और लोगों को बतावें कि यदि कोई उम्मीदवार उपयुक्त नहीं है या क्षेत्र के वोटर अपने क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन करना चाहते हों तो नोटा का व्यापक उपयोग करें। इस बारे में आप भी प्रयास करके अपने मंथन बतायें। हम इस बार लोक स्वराज्य की पहल इस तरह कर सकते हैं।

जयराम रमेश कांग्रेसी तो हैं मगर उनमें अंधभक्ति नहीं है और उन्होने बिना झिझक के अपने विचार प्रकट किये हैं। मंत्री रहते हुए उन्होने अच्छे निर्णय लिये हैं और अच्छे काम किये हैं। देश सेवा, ईमानदारी और निष्ठा उनके गुण हैं। तटस्थ भाव से हमें गुण दोष देखना चाहिए।

इस चुनाव में सबसे खराब बात यह हो रही है कि बडे से बडे नेता लोग भी आलोचना– प्रत्यालोचना में उलझे हैं। उन लोंगां को चाहिए कि वे अपनी योजना बतावें, यह बतावें कि वे सत्ता में आऐंगे तो क्या करेंगे, देश की कौन सी समस्या को ज्यादा महत्व देते हैं, उनकी नीति क्या होगी केवल प्रतिपक्षी की निंदा करते रहना अच्छे राजनीतिक का लक्षण नहीं है। केजरीवाल ने मोदी को पत्र लिखकर जो मुद्दे उठाये उनका जवाब मोदी को देना चाहिए। समझदार राजनीतिज्ञों को रेडियो, टी.व्ही. पर आपस में एक मंच पर आकर बहस करनी चाहिए और बताना चाहिए कि उनकी नीतियाँ क्यों ठीक हैं। देश का दुर्भाग्य है कि ऐसे समझदार नेता नहीं हैं।

मेरी दृष्टि में तो मोदी, राहुल, मायावती, जयललिता, मुलायम आदि कोई भी इस देश का सुयोग्य प्रधानमंत्री बनने लायक नहीं है। केवल ममता बनर्जी में ऐसी योग्यता नजर आती है पर उनका साथ कोई दल नहीं देगा।

13 जून से 22 जून तक आप दिल्ली में धरना देने वाले हैं। मैं इसका विरोध नहीं करता मगर सोचता हूँ कि क्या धरना, भूख–हड़ताल, जूलूस, बडी–बडी सभाऐं अब असरकारक रह गई हैं? इन उपायों का बहुत अवमूलन हो गया है। इनका अब वैसा प्रभान नहीं रह गया। अब कोई ज्यादा प्रभावकारी उपाय आजमाने की जरूरत है। ज्यादा प्रभावकारी उपाय क्या हो सकता है इस बारे में नव चिंतन की आवश्यकता है।गांधी जी ने सत्याग्रह का उपाय खोजा (अविष्कार किया) उस उपाय से सारी ब्रिटिश सल्तनत हिल गई और विश्वव्यापी प्रभाव हुआ।

अहिंसा के क्षेत्र में बिनोबा ने भूदान यज्ञ का अविष्कार किया और अभूतपूर्व पराक्रम किया। तेलंगाना में उस समय हिंसा फैल रही थी। वह हिंसा व्यापक रूप से फैलकर हानि कर सकती थी। उस हिंसावृत्ति का शमन करके भूमि समस्या सुलझानें का महान उपाय सुझाया। इसी का परिणाम है कि केंद्र और राज्य सरकारों नें गरीबों को जमीन– मकान, कृषि साधन देने की नीति अपनाई। आज विनोबा को इसका कोई श्रेय नहीं देगा। मगर उनका बोया विचार बीज इतना फैला है।

उत्तर– नोटा के लिए पूरी ताकत लगाने की अपेक्षा राईट टू रिकॉल अधिक लाभकारी होगा, इसलिये हम नोटा की जगह रिकॉल की बात कह रहे हैं। जयराम रमेश के विषय में मुझे यह भी जानकारी है कि जब वे पर्यावरण मंत्रालय भी संभाल रहे थे तब इन्होनें विकास की अनेक योजनाओं को रोक कर भी रख दिया था। क्योंकि ये तथाकथित सलाहकार परिषद् के प्रभाव में थे। मनमोहन सिंह ने बड़ी मुश्किल से जयराम रमेश से पर्यावरण मंत्रालय वापिस लेकर उन्हें ग्रामीण विकास मंत्रालय दिया। नेताओं को क्या करना चाहिए इस संबंध में आपकी सलाह अच्छी है। आप उनको समझाने का प्रयास करिये। मैं तो उन्हें समझाने में अपनी शक्ति नहीं लगाउंगा। ममता बनर्जी की आपने प्रशंसा की है उससे मैं सहमत नहीं हूँ। बंगाल में सत्ता परिवर्तन के लिए ममता बनर्जी ने जिस तरह नक्सलवाद को प्रोत्साहित किया, यहां तक कि ममता के रेलमंत्री रहते हुए नक्सलवादियों ने ट्रेन पर आक्रमण करके कुछ यात्रियों की हत्या कर दी, मैं सत्ता संघर्ष में नीचे उतरने को उचित नहीं मानता। प्रधानमंत्री बनने के लालच में चिट फंडों को बंगाल में जिस तरह प्रोत्साहित किया गया वह भी कोई अच्छी बात नहीं थी। फिर भी अभी और आगे देखने की आवश्यकता है।

13 जून से 22 जून तक जो धरने का कार्यक्रम है उसमें मैं नेतृत्व नहीं कर रहा हूँ। मैं तो हमारे अनेक साथियों की इस योजना का सहायक मात्र हूँ। मैं चाहता हूँ कि आचार्य पंकज जी ऋषिकेश में हैं अथवा सिद्धार्थ शर्मा जी जो गांधी पीस फांउडेशन, बैंगलोर कर्नाटक के संचालक हैं उनसे इस संबंध में विचार करें। यदि इन घिसे– पिटे उपायों की अपेक्षा आप

कोई अन्य प्रभावकारी उपाय बता सकें तो मैं भी उनका मार्गदर्शन करूं। आपने विनोबा जी के भूदान आंदोलन को प्रभावकारी बताया मैं ऐसा नहीं मानता। सच्चाई यह है कि पंड़ित नेहरू को डर था कि विनोबा और उनका सर्वोदय मुझे स्वतंत्रतापूर्वक अपनी मनमानी नहीं करने देगा। इसलिये उन्होनें विनोबा जी और सर्वोदय को इस समाज सुधार कार्य में लगा दिया। स्वतंत्रता के तत्काल बाद सामाजिक सुधार हमारी पहली आवश्यकता नहीं थी बल्कि राजनेताओं को रोकने के उपाय करने चाहिए थे। 60 वर्षों की स्वतंत्रता के बाद भी समाज का इतना गहरा नैतिक पतन हुआ उसका कारण विनोबा और उनके सर्वोदय का राजनीति पर अंकुश का गांधीवादी मार्ग छोडकर समाज सेवा की तरफ झुक जाना हीं रहा। आज भी सर्वोदय लोक स्वराज्य की बात से तो दूरी बनाता है दूसरी ओर नक्सलवादियों की मदद करता है। संसद पर आक्रमण के संदेहास्पद आरोपी प्रो0 गिलानी का सम्मान करता है, साम्यवादियों के इशारे पर विघुत उत्पादन योजनाओं का विरोध करता है। आप हीं बतायें कि मैं इन सबको देखते हुए विनोबा और सर्वोदय का किस तरह आंकलन करूं। मैं उनकी नीयत पर प्रश्न नहीं उठा रहा किंतु जिस तरह वे नेहरू तथा साम्यवादियों से छले गये हैं उस पर अवश्य हीं प्रश्न उठा रहा हूँ कि उन्होनें संघर्ष का मार्ग छोडकर समाज सुधार का मार्ग पकड़ लिया।

9– रामस्वरूप, नागौर, राजस्थान, 51760

विचार–ज्ञानतत्व अंक 286 कें मुद्दे पर आपने प्रकाश डाला है।

यह एकदम सही है कि परिभाषा के गलत होने से निष्कर्ष गलत हो जाता है। इस कारण से वर्तमान (मार्च 2014 से) में 213 राष्ट्रों के अधिक लोगों को नर्क भोगना पड़ रहा है।

समस्याऐं 3 में शब्द प्राकृतिक के स्थान पर नैसर्गिक शब्द और अच्छा रहेगा। अंगेजी में नेचुरल कहते हैं उसका हिंदी में 'नैसर्गिक' शब्द और ठीक है। 4 में भूमंडलीय से ग्रामीण तक होना चाहिए।

3/3 पति यानि रक्षक। भारत की सभ्य आदि संस्कृति में यही भाव है। राष्ट्रपति यानि राष्ट्र रक्षक 3/15 'वैश्यालयों' शब्द में वर्णित वेश्यालयों हो। संस्कृत वैश्य(सर्वपोषक) का स्वीदानी वेश्या है। आपका तात्पर्य वारांगना (जिस्मफरोसी करने को) मजबूर बेबस है। अतः 3/15 में वारांगनालयों' शब्द करने की कृपा करें।

वैसे एक भी स्त्री को वारांगना न बनना पडे ऐसी स्थिति बना सकते हैं। अनाचार, अधर्म को घटाना, न्यायकारी, दयालु, निर्विकार, अमन पवित्र पुरूषों को बनाना दायित्व है हम सबका।

3/16 ' महिलाऐं 2 प्रतिशत हीं आधुनिक होती है' यहाँ आधुनिक शब्द की जगह 'विदेश में उत्पन्न असंयम की समर्थक धारक ज्यादा ठीक रहेगा।

4 आर्थिक स्थिति 1947 में रूपया बराबर डॉलर या 1857 में (झाँसी की लक्ष्मीबाई) के समय में रूपया बराबर 11 डॉलर या 1721(कर्नाटक की बेनाला) के समय क्या था शोध हो।

ब्रिटानी हुकूमत नें 1857 की तुलना में भारतीयों की आर्थिक स्थिति को 1/11 कर दिया। शताब्दी की 2/3 वाले 67 सालों की नकली औजारों में डॉलर 70 रूपये बराबर हो गया था। तो 1957 की तुलना में 1/70। यानि 1857 की तुलना में 2014 में 1/11'1/70 बराबर 1/700। इस कारण से हम भारतीयों की आर्थिक स्थिति दयनीय है।

गाय (व अन्य प्राणी) हत्या सारे मादक/ नशे प्रदूषक विषाक्त उघम बंद करके गौ सेवा/गो न्मुखी कृषि/गो केंद्रित हस्त कौशल को सरकार प्रोत्साहित करे तो ठीक हो जाये।

उत्तर– आपने भाषा संबंधी त्रुटियों का उल्लेख किया है। मैं उनसे सहमत हूँ। यह मेरी योग्यता की कमी है कि मैं कई बार समझाने के बाद भी ऐसी भूल कर जाता हूँ। आगे और भाषा की सतर्कता रखेंगे। सन् 1721 में रूपये और डॉलर का क्या अनुपात था यह न तो मुझे पता है न पता करने का कोई साधन है। स्वतंत्रता के समय डॉलर एक रूपये के बराबर था आज डॉलर अपनी जगह पर है और रूपये का मूल्य करीब 84 रूपये के बराबर हो गया है। जबकि डॉलर 60 रूपये के आस–पास है। हमारे रूपये का आंतरिक पतन हो रहा है, विदेशी स्तर पर नहीं। विदेशों में तो डॉलर की जगह 60 रूपये हीं देने पडेंगे। इस तरह डॉलर की तुलना में स्वतंत्रता के बाद रूपया करीब 40 प्रतिशत मजबूत हुआ है जो एक उपलब्धि तो है किंतु पर्याप्त नहीं। यदि डॉलर 50 रूपये के आस–पास होता तो अधिक अच्छा होता। मनमोहन सिंह की आर्थिक व्यवस्था में रूपया बहुत मजबूत था किंतु जब से मनमोहन सिंह को कठपुतली बनाकर सोनिया के माध्यम से सलाहकार परिषद जैसे लोग भारत की अर्थनीति में हस्तक्षेप करने लगे तब से भारत की विकास दर तथा डॉलर की तुलना में रूपया गिरता चला गया इसमें न मनमोहन सिंह का दोष है, न वित मंत्री का। इसका उत्तर तो सोनिया गांधी से पूछा जाना चाहिए। जो जनता वोट के माध्यम से सोनिया गांधी से पूछ रही हैं।

यदि आप सुरक्षा संबंधी बातें करें तब भी मनमोहन सिंह को सोनिया गांधी ने हीं अस्थिर किया। जब उस समय के गृहमंत्री पी. चिदंबरम् ने नक्सलवादियों को समाप्त करने की एक निश्चित और प्रभावकारी योजना बना ली थी तब सोनिया गांधी और इनकी सलाहकार परिषद् ने हीं दिग्विजय सिंह को आगे करके उस योजना को रूकवा दिया था। इस तरह देश की

अर्थव्यवस्था अथवा आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को बिगडनें में सोनिया गांधी का भी हांथ रहा है। सोनिया गांधी की उस भूल का लाभ भा.ज.पा. अथवा संघ परिवार ने उठा लिया तो इसमें दोष किसका है?

10–श्री किशोरी चौधरी, इस्लामपुर, नालंदा, बिहार, 23319

प्रश्न–काफी दिनों बाद 288 नं. का ज्ञानतत्व मिला है जिसे ध्यान से पढ़ते समय आपके प्रश्नोत्तर संख्या 4 जो अमर सिंह आर्य जयपुर (राजस्थान) के लिये लिखे हैं कि हिंदू संगठनों ने भारत में साप्रदायिकता की शुरूआत की। दलील में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गांधी हत्या का उदाहरण दिया गया है। जबकि मैं जानता हूँ कि मुसलमानो द्वारा सांम्प्रदायिकता का नंगा–नाच, हिंदू– मुस्लिम दंगा आजादी होते हीं होते आ रहे हैं। जो अब तक नहीं रूके हैं। कहीं भी दंगा होता है उसमें पहल मुस्लिमों द्वारा हीं होती है। शुक्रवार के नमाज एवं दैनिक नमाजों के समय मुस्लिमों द्वारा मुस्लिम एकता के लिये आह्वान होता है। पाकिस्तान बना था तो पहल किसने की थी ? क्या हिंदुओं ने कहा था कि तुम लोग पाक साफ देश बनाओ और हम लोग गंदा देश में रहते है। धर्म हमेशा से सहिष्णु रहा है जो सबको समाहित करता आया है और अभी सबसे मिल जाता है। परंतु पहल दूसरे धर्मावलंबी करते आये हैं। इतिहास भी देखें तो मुस्लिम शासकों, मुगलों आदि ने क्या– क्या किया। अभी भी मुसलमानों के पास नाजायज़ अस्त्र– शस्त्र, बम आदि बरामद होते हैं। तो तुष्टिकरण में उसे छोड़ दिया जाता है कि अल्पसंख्यक अपनी सुरक्षा के लिये रखते हैं

उत्तर–स्वतंत्रता के पहले हिंदु महासभा पहले बनी और मुस्लिम लीग बाद में। उस समय हिंदुओं को अलग– अलग सभा बनाने की आवश्यकता क्यों पडी थी ? संघ एक सांस्कृतिक संगठन था और स्वतंत्रता के संघर्ष से वह बाहर रहा तो भारत के स्वतंत्र होते हीं राजनीति का मोह क्यों पैदा हो गया? मैं मानता हूँ कि भारत का विभाजन मुसलमानों की सांप्रदायिक सोच के कारण हुआ। मुसलमानों ने हीं भारत से अलग होने की पहल की। स्वतंत्रता के पूर्व अलगाववादी संघ और हिंदू महासभा की अपेक्षा क्रांतिकारियों सुभाषचंद्र बोस या गांधी को अधिक समर्थन प्राप्त था। हिंदुओं नें कभी सांप्रदायिक हिंदुओं को अधिक महत्व नहीं दिया जैसा मुसलमानों ने किया। लेकिन जब भारत विभाजित हो गया, सांप्रदायिक मुसलमान पाकिस्तान चले गये तब स्वतंत्रता के बाद सांप्रदायिकता की शुरूआत गांधी की हत्या करने वाले तथा कथित कट्टरपंथी सांप्रदायिक हिंदुओं ने की। उस समय कश्मीर का मुसलमान भी भारत के साथ जुडना चाहता था। राजा हरिसिंह को वहां के अधिकांश मुसलमान भी सम्मान देते थे। ऐसी स्थिति में श्यामाप्रसाद मुखर्जी को कश्मीर में घुसकर आंदोलन की पहल क्यों करनी पडी थी। मुसलमानों की आदत ठीक नहीं है यह बात आप अकेले नहीं जानते बल्कि मैं भी जानता हूँ। किंतु स्वतंत्रता के बाद मुसलमानों के मन में अविश्वास पैदा करने की पहल हिंदुओं ने नहीं की, मुसलमानों ने भी नहीं की बल्कि कुछ हिंदु विचार धारा छोडकर बने सांप्रदायिक हिंदु संगठनों ने की जिनका राजनीतिक स्वार्थ था। इन संगठनों के सदस्यों में चोटीतिलक जनेऊं तो दिखता है किंतु धर्म के एक भी गुण न उस समय थे न आज हैं। हिंदुओं की आड़ लेकर सत्ता प्राप्त करने के प्रयत्न कभी प्रशंसनीय नहीं हो सकते। आप मुसलमानों की कमियां गिनाकर जो कुछ सिद्ध करना चाहते हें वह गांधी हत्या अथवा कश्मीर में जाकर छेड–छाड करने की पहल का उत्तर नहीं है। मैं चाहता हूँ कि मुसलिम सांप्रदायिकता और हिंदु सांप्रदायिकता को अलग–अलग न देखकर धर्म निरपेक्ष और सांप्रदायिक के बीच विभाजन किया जाये। यदि यह प्रयत्न हुआ तो भले हीं मुसलमानों में धर्म निरपेक्ष लोगों की संख्या कम हो और हिंदुओं में अधिक, किंतु समाधान तो यही होगा अन्य नहीं। प्रवृत्ति के आधार पर हीं समाज का विभाजन हो सकता है धर्म के आधार पर नहीं हो सकता।

11– रत्नभूषण जी, बलसाड, गुजरात 1188

प्रश्न–आपका पाक्षिक सामयिक' ज्ञानतत्व' नियमित मिलता है और नियमित उसको पढ़ता भी हूँ। सब जगह से जब अंधकार का प्रभाव बढ़ रहा है और उसके दुष्प्रभाव को दूर करने की कोई भी आशा नहीं थी ऐसे अवसर पर श्री जयेन्द्र भाई के द्वारा आपका संपर्क हुआ। आजीवन सदस्य बनने के बाद आज दिन तक नियमित रूप से आपका पाक्षिक मिल रहा है। उसके लिये आप को और आप के तंत्र को धन्यवाद! इन्हें नियमित रूप से भेजते रहें।

दूसरी बात– हम एक जैन साधु हैं और हमारे आचार विषयक व्यवहार भी आचार संहिता जो साधु जीवन की– इस अनुसार अमुक सीमा मर्यादा भी हमारे लिये होती है। फिर भी आप जो कार्य कर रहे हैं, जिस गति से चिन्तन की धारा आपके ज्ञानतत्व के माध्यम से आप बढ़ा रहे हैं, उसमें से कुछ आशा हो सकती है कि जरूर कुछ न कुछ शुभ परिणाम आयेगा और भारत की प्रजा का उदय होने की संभावना दिखती है।

तीसरी बात– किसी को इस कार्य में आर्थिक साहकार देने की भावना हो तो उसके लिये कुछ कार्य क्या करें? इसका मार्गदर्शन मिलना जरूरी है। हमारा कार्यालय पता तो आपके लिस्ट में है हीं जो कि 11887 है हीं। उस पते पर उत्तर मिलने से ठीक रहेगा।

वास्तव में भारत का संविधान हीं भारत की प्रजा के लिए भयंकर कैदखाना है। इस सत्य को जब तक लोग नहीं समझ रहें हैं तब तक भारत की प्रजा के लिये सुख– चैन के दिन दूर हैं। ऐसा मुझे प्रतीत होता है।
इस संबंध में हम क्या कर सकते हैं लिखिए।

उत्तर– आप जैन साधु हैं और मैं आर्य समाज द्वारा प्रेरित मुनि। दोनों की अपनी सीमाऐं हैं और दोनों के अपने दायित्व भी हैं। समाज में यदि सामाजिक मान्यताओं में गिरावट आती है तो स्वाभाविक है कि आप हम सरीखे लोग कहीं न कहीं असफल हैं। यदि राज्य ठीक है और समाज का पतन हो रहा है तो समाज को समझाने की आवश्यकता है किंतु राज्य गलत हो उसकी नीयत खराब हो, उसमें अपराधी तत्वों का समावेश हो जाये, वह समाज को गुलाम बनाकर रखना चाहता हो तो समाज सुधार की अपेक्षा राज्य पर अंकुश लगाना अधिक महत्वपूर्ण होगा। भारत में कोई राजा नहीं है बल्कि लोकतंत्र है। इसका अर्थ होता है कि भारत का संविधान हीं व्यवस्थापक है अर्थात् राजा है। यदि राजनेता संसद में बैठकर संविधान रूपी राजा को हीं गुलाम बना ले तो आप समझ सकते हैं कि समाज का क्या हाल होगा? आवश्यकता यह है कि हम–आप जैसे लोग समाज को इस दिशा में जागृत करें कि संविधान संसद की गुलामी से मुक्त हो सके। आज तो स्थिति यह आ गयी है कि उमा भारती , बाबा रामदेव सरीखे सन्यासी लोग भी उस संसद में पहुँचने की जी तोड़ कोशिश कर रहे हैं जिस संसद में जाना हम– आप सरीखें लोगों का कार्य नहीं है। यदि हम आप संविधान को गुलाम बनाने की प्रक्रिया में लग जाएंगे तो इस कार्य के लिए जन– जागरण कौन करेगा? हमारी संसद ने इतना गलत कार्य किया है कि जन प्रतिनिधियों को स्वतंत्रतापूर्वक संसद में भी अपनी बात रखने का अधिकार छीन कर दल प्रमुख को सौंप दिया है और अपने इस आदेश के लिए संविधान में मनमानी बातें घुसाकर संविधान संरक्षण प्राप्त कर लिया है। हमारी प्राथमिकता है कि हम पहले संविधान को मुक्त करावें इसके बाद उसमें संसोधन कराकर जनप्रतिनिधियों को दल प्रमुखों की जेल से मुक्त करायें तभी वास्तविक लोकतंत्र दिख सकेगा। इसके लिए दो मार्ग है पहला संसद में ऐसे लोगों को भेजा जाये जो पहला काम यही करें अथवा दूसरा तरीका यह है कि प्रबल जनमत जागृत करके वर्तमान संसद को मजबूर कर दिया जाये कि वह इस प्रकार के संसोधन संविधान में कर दे। लोक स्वराज मंच, व्यवस्था परिवर्तन मंच, अन्ना व अरविंद केजरीवाल का मंच तथा कुछ अन्य लोग भी पूरी तरह या आंशिक रूप से इन दोनों दिशाओं में सक्रिय हैं। आप सबसे निवेदन है कि इन मंचों से जुड़कर अथवा कोई ऐसा मंच बनाकर जो इस दिशा में समर्पित होकर कार्य करे, जुड सकते हैं। वर्तमान समय राष्ट्र को उपर ले जाने के प्रयत्नों का नहीं है बल्कि समाज में आ रही निरंतर गिरावट को रोकने का है। राष्ट्र की उन्नति या विकास की बातें करके सत्ता में पहुँचनें का प्रयास कर रहे राजनैतिक दल जिनमें संघ परिवार भी शामिल है, हमारा आदर्श नहीं हो सकता।

12. सत्यपाल शर्मा, नवीनगर, बरेली (उत्तरप्रदेश), 6894

प्रश्न– ज्ञान तत्व 286 में आपके विचार प्रकाशित हुए है। आप ने इसलाम के बारे में भी लिखा है और संघ के विषय में भी, ऐसा लगता है कि आप ने इस्लाम को तो ठीक से समझा है किंतु संघ को नही समझा । संघ और इस्लाम की कार्यप्रणाली एक तरह की है इससे मै सहमत नही हूँ। पूरी दुनिया इस्लामिक आतंकवाद से भयभीत है किंतु संघ ने कोई ऐसा कार्य नही किया है जिससे दुनिया भयभीत हो। संघ का प्रभाव आंशिक रूप से शहरी क्षेत्र में है,ग्रामीण क्षेत्र में तो न के बराबर है।
हिंदुस्तान की सबसे पहली राजनैतिक पार्टी हिंदु महासभा का गठन देश में 1882 में हुआ था। आजादी के आंदोलन में हिंदु महासभा का सबसे बड़ा योगदान रहा। 1915 में अखिल हिंदु महासभा का राष्ट्रीय अध्यक्ष महाराजा मनीन्द्र चंद्र नन्दी को बनाया गया। दूसरे राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. मदन मोहन मालवीय बनें। भारत की स्वतंत्रता व हिंदु, हिंदी व हिंदुस्तान की रक्षा के कार्य में हिंदु महासभा का योगदान सराहनीय रहा। हिंदु महासभा अखण्ड़ हिंदु राष्ट्र हिंदु रक्षा करने के कृत संकल्प है। 1914 से पूर्व न्यायालयों में अंग्रेजी व उर्दु में काम होता था। हिंदु महासभा ने प्रचण्ड़ आंदोलन चलाकर न्यायालयों के कार्य में हिंदी को चालू करवाया।
आज अखण्ड़ हिंदु राष्ट्र के निर्माण व हिंदी, हिंदुस्तान की रक्षा का कार्य पूर्ण तत्परता व सतर्कता पूर्वक हिंदु महासभा कर रही है।
अब समय की मांग है कि आरक्षण को जातिगत आधार से हटाकर आर्थिक पिछडेपन के आधार पर कर दिया जाना चाहिए। जातिगत आधार दिया गया आरक्षण भविष्य में चालू रखना राष्ट्रहित में नहीं है।

अभी कुछ दिन पहले कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जनार्दन द्विवेदी ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि अब आरक्षण को जातिगत आधार से हटाकर आर्थिक पिछडेपन के आधार पर कर दिया जाना चाहिए। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं तथा सोनिया गांधी ने जनार्दन द्विवेदी के मत को पूर्ण रूप से खारिज कर दिया।

जातिगत आरक्षण से कम योग्यता तथा कम प्रतिभा के व्यक्तियों को सुयोग्य व्यक्तियों की उपेक्षा करके अवसर प्रदान करना नैसर्गिक न्याय के खिलाफ है। जातिगत आरक्षण का सबसे ज्यादा लाभ साधन सम्पन्न उंचे पदों पर आसीन व्यक्ति पा रहे हैं गरीबों को लाभ नहीं मिल पा रहा है। कृपया इन विषयों पर अपने ओजस्वी विचार रखें।

उत्तर— किसी मैलिक इकाई की समीक्षा गुण दोषो के आधार पर पूरी तरह की जा सकती है किंतु बीच की इकाईयो की समीक्षा पूरी तरह न करके तुलनात्मक रूप से ही संभव है। मैं आप से सहमत हूॅ कि इस्लाम और संघ साम्प्रदायिकता पर विचार करते समय एक समान नही माने जा सकते। इस्लाम का चिंतन , मान्यताएॅ तथा कार्य प्रणाली संघ की अपेक्षा कई गुना अधिक साम्प्रदायिक है। यह बात सच है, दूसरी ओर यदि धार्मिक संस्थाओं की समीक्षा की जाएगी तो गुण अवगुण के आधार पर संघ परिवार इस्लाम से तो बहुत अच्छा है,किंतु ईसाईयत तथा हिंदु से बहुत नीचे । मैं समझ नही पा रहा हूॅ कि संघ को या इस्लाम को अच्छा कहूॅ या बुरा । क्योकि इस्लाम और साम्यवाद की यदि तुलना की जाय तो साम्यवाद इस्लाम से भी ज्यादा गलत दिखाई देता है। इस्लाम ने समाज में व्यक्ति के प्राकृतिक अधिकारो, जिन्हे मैलिक अधिकार कहते है, उन्हे मान्यता नही दी है, साम्यवाद ने भी नही दी है और संघ परिवार ने भी नही दी है।इस्लाम भी मानता है कि यदि कोई धर्म विरूद्ध आचरण करे तो, किसी भी व्यक्ति को अधिकार है कि वह उसकी हत्या कर दें। संघ की मान्यता है कि यदि कोई व्यक्ति राष्ट्र के विरूद्ध आचरण करे तो किसी भी व्यक्ति को उसकी हत्या कर देने तक का अधिकार है। गॉधी हत्या के बाद आज तक संघ के विचार में कोई ऐसा बदलाव नही आया जो व्यक्ति के प्राकृतिक अधिकारों को मान्यता देता हो। कुछ वर्ष पहले गुजरात के चुनाव के समय मेधा पाटकर को जिस तरह पीटा गया, बस्तर में ब्रहमदेव शर्मा को जिस तरह पीटा गया , प्रशांत भूषण के कश्मीर संबंधी बयान के उपर जिस तरह कई बार पीटा गया, अरबिंद केजरीवाल को जिस तरह अपमानित किया गया, यह सब कृत्य इस्लाम और साम्यवाद के मूल भूत विचारो से मेल खाते है या नहीं। इस्लाम जहॉ भी कमजोर रहा है वहॉ दब कर रहा है और मजबूत होते ही मूल स्वभाव में आ जाता है। साम्यवाद का भी आचरण ऐसा ही है। संघ परिवार अब तक कभी बहुमत में नही आया क्योकि उसे हिंदु बहुमत का सर्मथन नही मिला । पहली बार उसे पूर्ण बहुमत मिला है। बहुमत में आने के बाद वह क्या करेगा इसका उत्तर काल्पनिक ही हो सकता है, लेकिन स्पष्ट दिखता है कि संघ परिवार समाज को राष्ट्र से उपर मानता है, तो इस्लाम समाज से धर्म को उपर मानता है तथा साम्यवाद समाज से सरकार को उपर मानता है। कोई हिंदु ऐसा नही हो सकता जो समाज को राष्ट्र धर्म और सरकार के उपर न मानता हो।

आपने हिंदू महासभा के बारे में लिखा है। मैं अब भी मानता हूॅ कि हिंदु महासभा का बनना एक गलत कार्य था। स्वतंत्रता के बहुत पहले जब भारत विभाजन की बात हीं नहीं उठी थी तब हिंदू महासभा में अखण्ड़ भारत की आवाज़ क्यों उठाई थी। क्या उस समय हिंदू महासभा अथवा संघ परिवार भारत को हिंदू राष्ट्र नहीं बनाना चाहते थे और यदि चाहते थे तो भारत विभाजन में इन्हें भी दोषी क्यों न माना जाये? समाज के सभी अच्छे लोगो को प्रवृति के आधार पर एक जुट होना चाहिए न कि धर्म, जाति, राष्ट्रीयता के आधार पर । शरीफ लोगो के अंदर हिंदू, मुसलमान, ईसाई का भेद हो सकता है। लेकिन प्रवृत्ति को अलग करके ऐसा कोई संगठन नही बन सकता । आरक्षण के विषय में मेरे विचार स्पष्ट है कि आरक्षण का विचार मूल रूप से घातक है। आरक्षण सिर्फ प्रवृति के आधार पर ही दिया जा सकता है न जाति धर्म के आधार पर, न उम्र लिंग के आधार पर और न आर्थिक आधार पर। किसी गरीब़ डकैत को आर्थिक आधार पर किसी प्रकार की सहायता पहुँचाना कहां तक उचित है? किसी भी प्रकार का आरक्षण, आरक्षण प्राप्तकर्ता का अधिकार बन जाता है। यदि कोई गरीब है अथवा धार्मिक ,जातीय अथवा किसी अन्य आधार पर पिछडा हुआ है तो ऐसे व्यक्ति को सुविधा दी जा सकती है। किंतु यह सुविधा समाज या सरकार के स्वैच्छिक कर्तव्य के रूप में ही मानी जाएगी , न दायित्व के रूप में, न प्राप्तकर्ता के अधिकार के रूप में। प्राप्तकर्ता को दाता के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।

उत्तरार्ध

नोट—अगर आप कुछ ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका की राशि जमा करना चाहते है तो आप बजरंग लाल अग्रवाल, एस बी आई **11374646729** रामानुजगंज जिला—बलरामपुर रामानुजगंज छत्तीसगढ मे आप पैसा जमा करा सकते है। आप मनियार्डर भेज सकते हैं अथवा आप बजरंग अग्रवाल अथवा बजरंग मुनि, बनारस चौक, अम्बिकापुर सरगुजा छत्तीसगड के लिए चेक के द्वारा भी पैसा जमा करा सकते है।